वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य का विकास

प्रतिभा गौली

विद्यार्थी, केएलईच्या जी. आय. बागेवाडी कला, विज्ञान आणि वाणिज्य महाविद्यालय, निपाणी.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263894

ABSTRACT:

यह शोध-पत्र 21वीं शताब्दी के सबसे बड़े सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन, वैश्वीकरण (भूमंडलीकरण) के हिंदी भाषा और साहित्य पर पड़े प्रभावों का विश्लेषण करता है। 1991 के बाद लागू हुए वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में तकनीकी उन्नति, नव-मध्यम वर्ग का विकास और रोजगार के अवसर बढ़ाए, किंतु इसने पूंजीवादी मानसिकता और सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण जैसी नकारात्मकताएँ भी पैदा कीं। इस दौर में हिंदी को वैश्विक मंच मिला, लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों में अंग्रेजी की अनिवार्यता से इसके आर्थिक विकास में बाधा आई। हिंदी साहित्य के लिए, वैश्वीकरण ने प्रवासी जीवन, उपभोक्तावाद और पर्यावरण संकट जैसे नए विषय दिए, जिससे साहित्य का दायरा विस्तृत हुआ और उसे अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली। निष्कर्षतः, हिंदी साहित्य के सामने आधुनिकता को अपनाने के साथ-साथ अपनी मौलिक सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने की चुनौती है।

KEYWORDS:

वैश्वीकरण, हिंदी साहित्य, बाजारवाद, प्रवासी विमर्श, सांस्कृतिक अस्मिता.

शोधसार:

मानव सभ्यता के इतिहास में समय-समय पर ऐसे परिवर्तन हुए हैं जिन्होंने समाज, संस्कृति और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है। 21वीं शताब्दी का सबसे बड़ा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन वैश्वीकरण (Globalization) है। वैश्वीकरण ने राजनीति, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, भाषा, संचार और संस्कृति तक को एक साझा मंच पर ला दिया है। जब दुनिया की सीमाएँ सिकुड़ने लगती हैं और विभिन्न देश-समाज आपस में जुड़े रहते हैं, तो साहित्य जैसे संवेदनशील क्षेत्र पर भी उसका

सीधा प्रभाव पड़ता है। ग्लोबलाइजेशन के लिए हिंदी में भूमंडलीकरण शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द तो भारत की सभ्यता एवं संस्कृति "वसुधैव कुटुंबकम्" पर आधारित है। संक्षेप में कहें तो संपूर्ण विश्व को एकल प्रभाव व एक व्यवस्था के अंतर्गत लाना ही वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण का सामान्य अर्थ है - दुनिया के विभिन्न देशों और समाजों का परस्पर संवाद, आदान-प्रदान और एक-दूसरे पर प्रभाव। इसमें व्यापार, तकनीक, संचार, संस्कृति और शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीय विस्तार शामिल है। इंटरनेट, मोबाईल, सोशल मीडिया, उपग्रह चैनल और तेज गति के परिवहन को नई चुनौतियाँ और अवसर दिए हैं।

अर्थ: वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ होता है विश्व का एकीकरण। एकीकरण विभिन्न स्तरों पर अपना प्रभाव डालता है। वैश्वीकरण न तो केवल आर्थिक परिघटना है और न ही सांस्कृतिक। "श्री रघुवंशमणि" के अनुसार, वैश्वीकरण से तात्पर्य एकरूपता की प्रक्रिया से है जिसके अंतर्गत वस्तुओं, सेवाओं, उत्पादन साधनों, टेक्नोलॉजी का बिना सरकारी नियंत्रण के देश की सीमाओं से परे सीधे प्रसार से होता है।

२) वैश्वीकरण का इतिहास

कुछ विद्वान वैश्वीकरण को 20वीं शताब्दी की देन मानते हैं, लेकिन कुछ इसको एक सतत गतिशील प्रक्रिया मानते हैं। आधुनिक संदर्भ में वैश्वीकरण की शुरुआत 16वीं शताब्दी में हुई। वैश्वीकरण लाभ-केंद्रित व्यापार बन गया था। वैश्वीकरण का वर्तमान स्वरूप 20वीं शताब्दी के प्रारंभ से प्रकट हुआ। इसमें संपूर्ण विश्व को विश्वग्राम का रूप देने का प्रयास किया। 1991 में भारत सरकार ने महत्वपूर्ण सुधार के अंतर्गत उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण को अपनाया।

३) वैश्वीकरण के प्रभाव

अ] सकारात्मक प्रभाव:

नव विकसित मध्यम वर्ग - वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में मध्यम वर्ग का अभूतपूर्व विकास हुआ। यह नव विकसित मध्यम वर्ग शिक्षा, प्रदर्शनप्रियता, 'चादर से बाहर पाँव पसारती' खरीदारी पर जोर देता था। उधार लेकर घी पीने का चार्वाक दर्शन मानों नए रूप में मूर्तिमान हो उठा।

नई तकनीकों का प्रचलन - भारतीय समाज में आधुनिकतम तकनीकों का आगमन हुआ। लैपटॉप, स्मार्ट टीवी, एयर कंडीशनर, महंगे मोबाइल फोन, नवीनतम तकनीक से युक्त लगजरी कारें लेकर घूमना आम बात हो गई।

नवीन उद्योग धंधों का विकास - बड़ी-बड़ी मशीनों को खरीदना और नए-नए उद्योग स्थापित करना सरल होता गया। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को उन्हीं की शर्तों पर भारत में उद्योग लगाने और व्यापार करने की छूट मिल गई। विदेशों से सस्ते कल-पुर्जों का आयात इन उद्योगों के विकास में सहायक हुआ।

शिक्षा तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि - देश में उच्च शिक्षा का तेजी से विकास हुआ और अनेक नए शैक्षिक, तकनीकी, चिकित्सीय, प्रबंधन संस्थान खोले गए। इससे शिक्षा और रोजगार के नए अवसरों में आशातीत वृद्धि हुई।

विश्व एकता में वृद्धि - वैश्वीकरण से विश्व एकता के सूत्र में बंधता जा रहा है। सभी देशों में आपसी संबंधों में सुधार आया है। विश्व के सभी देश व्यापार ही नहीं अपितु विभिन्न परिस्थितियों में भी एक-दूसरे देश की सहायता कर रहे हैं।

ब] नकारात्मक प्रभाव:

» वेशभूषा में बदलाव

» भाषा में बदलाव

» पूंजीवादी मानसिकता का महत्व बढ़ा

» नैतिक मूल्यों का आउट ऑफ डेट होना

» शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता में कमी

४) वैश्वीकरण की विशेषताएँ

इसमें विश्व स्तर पर व्यापार बाधाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है ताकि दोनों देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का स्वतंत्र और सुचारु रूप से आवागमन हो सके। वैश्वीकरण के तहत विभिन्न राष्ट्रों के बीच पूंजी का मुक्त प्रवाह होता है, जिससे पूंजी का निर्माण संभव

होता है। श्रमिक वर्ग और कर्मियों को एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में स्वतंत्र रूप से स्थानांतरित करना संभव है। वैश्वीकरण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सुगम बनाता है। वैश्वीकरण से मजदूर बड़ी संख्या में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र या एक देश से दूसरे देश में चले जाते हैं।

५) वैश्वीकरण और हिंदी

विश्वग्राम की यह अवधारणा भारत की परंपरागत 'वसुधैव कुटुंबकम्' की मान्यता से बिल्कुल भिन्न थी। वसुधैव कुटुंबकम् परिवार से संबंधित भारतीय जीवन मूल्यों की प्रतिकृति है। इसका उद्देश्य स्पष्ट था- आपसी सहयोग, सबका सुख, शांति, समृद्धि, सबका सांस्कृतिक उत्थान। विदेशी भाषा, फिल्म, साहित्य, खान-पान, वेशभूषा, आचार व्यवहार भारतीय जीवन पर हावी होते गए। वैश्वीकरण एकरूपता के पक्ष में है जो कहता है कि पूरे विश्व में एक भाषा होगी जो वैश्वीकरण के विस्तार में सहायक सिद्ध होगी। भारत एक बहु-भाषा और बहु-बोली वाला देश है जो साथ में एक विशाल बाजार भी है। बाजार की एक प्रमुख शर्त है एक ही भाषा में संवाद। वैश्वीकरण ने भारतीय संस्कृति एवं हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संपूर्ण विश्व का ध्यान हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित हुआ है। फिर भी हम हिंदी को रोजगार और आर्थिक कार्यकलापों से उस प्रकार नहीं जोड़ पाए जैसे अंग्रेजी को जोड़ पाए हैं। यह केवल मनोरंजन की भाषा बनकर रह गई है। भारत में वैश्वीकरण की वजह से आई हुई MNCs की नौकरियों में अंग्रेजी की अनिवार्यता ने हिंदी के पंख ही काट दिए हैं। इसके द्वारा केवल अंग्रेजी में दक्ष युवाओं की नियुक्ती की जाती है। अंग्रेजी के प्रति बढ़ते आकर्षण ने हिंदी का गला घोंट कर रख दिया है।

वैश्वीकरण ने भारत का आर्थिक परिदृश्य तो परिवर्तित किया ही, इसके साथ-साथ यहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को भी अत्यधिक प्रभावित किया। इंटरनेट ने विश्व के एक कोने को दूसरे कोने से जोड़ दिया। भाषा पर वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करने वाले विद्वान "प्रभु जोशी" कहते हैं, "वैश्वीकरण की जो सैद्धांतिकी है, वह एकरूपता के पक्ष में हैं। वह मानते हैं कि यदि पूरे विश्व में एक भाषा होगी, तो वैश्वीकरण के विस्तार में सहायक सिद्ध होगी"। वे आगे समझाते हैं, "भारत एक बहुभाषा-बहुबोली वाला देश है। इसके साथ ही भारत

एक बहुत बड़ा बाजार भी है। बाजार के विस्तार की एक मुख्य शर्त है एक ही भाषा में संवाद। अतः अंग्रेजी का प्रचार-प्रसार विगत तीन-चार दशकों से किया जा रहा है। इसे ज्ञान-विज्ञान और प्रगति की भाषा के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

वैश्विक भाषा हिंदी: आज विश्व में हिंदी की स्थिति सराहनीय है। हिंदी भाषा मात्र साहित्य की चीज नहीं परंतु वह हृदयों को जोड़ने वाली ऊर्जा भी है और प्रेम की रंगारंग गंगा भी। "विश्व में हिंदी के अध्यापन, अध्ययन, पठन-पाठन के प्रचार-प्रसार के अनेक कारण हैं। वहीं विशुद्ध रूप में ज्ञान भंडार की पिपासा, कहीं अपनी अस्मिता बनाए रखने की चिंता, कहीं राजनैतिक प्रचार अथवा सामाजिक लाभ की दृष्टि। जो भी हो, इन सब कारणों से संसार के अनेक देशों में हिंदी का अध्ययन तथा अध्यापन विविध रूपों में हो रहा है।"

६) वैश्वीकरण और हिंदी साहित्य

साहित्य शब्द स + हित के मेल से बना है। साहित्य वह है जो हित की बात करे, जो व्यक्ति का मार्गदर्शन करे, संकुचित सोच से ऊपर उठाकर विश्व मानव बनाए, उसे पशु से ऊपर उठाकर सुसंस्कृत मानव बनाए वह साहित्य है। पिछले कुछ सालों में हिंदी साहित्य की रचना दिन दूनी रात चौगुनी हुई है। हिंदी में साहित्यकारों की बाढ़ सी आ गई है। वैश्वीकरण ने संस्कृति की भाँति साहित्य को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। साहित्य के प्रभाव में बाजार ने अपनी विनाशकारी भूमिका निभाई है। साहित्य पर सबसे बड़ा संकट यह है कि इस मशीनी युग में साहित्य कोई पढ़ना ही नहीं चाहता है। पुस्तकें खरीदने एवं बेचने की संस्कृति विलुप्त सी हो गई है। वैश्वीकरण ने साहित्य के पंख काट दिए हैं, उसे आकाश की बुलंदियों से नीचे गिराकर जमीन पर तड़पने के लिए छोड़ दिया है। साहित्य की मूल अवधारणा समझ लेने के पश्चात् वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में भारत में साहित्य की स्थिति पर विचार करना समीचीन होगा।

साहित्य चूँकि समाज का दर्पण होता है, इसलिए समाज में होने वाले परिवर्तन साहित्य में परिलक्षित होते ही हैं। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा। वैश्वीकरण ने हिंदी साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय मंच प्रदान किया है, जिससे साहित्य का वैश्विक स्तर पर प्रसार हुआ है और विभिन्न

भाषाओं में उसका अनुवाद संभव हुआ है। इसने हिंदी लेखकों को समकालीन विषयों, जैसे मल्टीनेशनल कंपनियों, मोबाइल क्रांति और सामाजिक परिवर्तनों पर लिखने के लिए प्रेरित किया है, जिससे हिंदी साहित्य में विविधता और आधुनिकता आई है। हालांकि, इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक मूल्यों और क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व में कमी आने का भी जोखिम है।

पहले हिंदी साहित्य का दायरा सामाजिक यथार्थ, ग्रामीण जीवन और परंपराओं तक सीमित था। वैश्वीकरण के बाद प्रवासी जीवन, शहरी संस्कृति, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, पर्यावरण संकट, स्त्री और दलित विमर्श जैसे नए विषयों का समावेश हुआ। वैश्वीकरण के कारण हिंदी साहित्य में बहुभाषिक प्रयोग बढ़ा। अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग लेखन को आधुनिक संदर्भों से जोड़ता है। भाषा अधिक सहज, संवादपरक और पत्रकारिता-शैली की ओर उन्मुख हुई। विदेशों में बसे हिंदी भाषी लेखक अपने अनुभवों को साहित्य में व्यक्त करने लगे। उनकी रचनाओं में प्रवासी पीड़ा, सांस्कृतिक द्वंद्व और पहचान की खोज प्रमुख बन गई। इससे हिंदी साहित्य का दायरा विश्व स्तर पर विस्तृत हुआ। वैश्वीकरण के साथ इंटरनेट, सोशल मीडिया और ई-पब्लिशिंग ने हिंदी साहित्य को नई गति दी। ऑनलाइन पत्रिकाएँ, ब्लॉग और ई-पुस्तकें हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार के सशक्त साधन बने। हिंदी साहित्यकारों ने वैश्वीकरण के दुष्प्रभावों—जैसे उपभोक्तावाद, असमानता, बेरोजगारी और सांस्कृतिक ह्रास—को भी अपनी रचनाओं में जगह दी। इस प्रकार साहित्य सामाजिक चेतना का दर्पण बना।

७) निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने हिंदी साहित्य को एक नई दृष्टि और व्यापकता प्रदान की है। इससे साहित्य के विषय, भाषा, शैली और अभिव्यक्ति में विविधता आई है। हिंदी साहित्य अब केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक पटल पर अपनी पहचान बना रहा है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने हिंदी साहित्य को आधुनिक, जीवंत और विश्वव्यापी स्वरूप प्रदान किया है।

वैश्वीकरण ने हिंदी साहित्य के लिए चुनौतियाँ और अवसर दोनों उत्पन्न किए हैं। जहाँ एक ओर इसने हिंदी को एक वैश्विक मंच प्रदान

किया है और नए विषयों से समृद्ध किया है, वहीं दूसरी ओर इसने बाजारवाद और सांस्कृतिक पहचान के संकट जैसी चुनौतियाँ भी पेश की हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए हिंदी साहित्य को अपनी मूल पहचान बनाए रखते हुए ही आधुनिकता को अपनाना होगा, ताकि यह विश्व स्तर पर अपनी प्रासंगिकता को बनाए रख सके।

वैश्वीकरण ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और व्यापकता प्रदान की है। इसके प्रभाव से हिंदी भाषा केवल भारत तक सीमित न रहकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने लगी है। साहित्यकारों ने बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संदर्भों को समझकर अपने लेखन में नए मुद्दों जैसे– उपभोक्तावाद, प्रवासी जीवन, बहुराष्ट्रीय पूँजी, तकनीकी विकास, सांस्कृतिक आदान-प्रदान आदि को स्थान दिया। हिंदी साहित्य अब केवल परंपरागत विषयों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आधुनिक जीवन की जटिलताओं और वैश्विक चुनौतियों का चित्रण भी कर रहा है। वैश्वीकरण ने एक ओर जहाँ साहित्य को नई संभावनाएँ और अंतर्राष्ट्रीय मंच दिए हैं, वहीं दूसरी ओर बाजारीकरण और सांस्कृतिक क्षरण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने हिंदी साहित्य के क्षितिज का विस्तार किया है। इसने उसे नई विषय वस्तु, नई संवेदनाएँ और नई अभिव्यक्ति शैली प्रदान की है। लेकिन साहित्यकारों का दायित्व है कि वे वैश्विक संदर्भों में भी हिंदी साहित्य की मौलिकता, मानवीय मूल्य और भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता को सुरक्षित रखें।

संदर्भ ग्रंथ:

1. हिन्दी भाषा एवं साहित्य : विविध आयाम (पृ. संख्या 35) लेखक - डॉ. येल्लुरे एम. ए.
2. हिन्दी भाषा एवं साहित्य : विविध आयाम (पृ. संख्या 126) लेखक - डॉ. येल्लुरे एम. ए.
3. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य
4. अंतर्जाल
5. यूट्यूब चैनल (एकलव्य स्नातक) "बीए 4th Sem पॉलिटिकल साइंस" चैप्टर

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.